कक्षा - 9

मंथनम्

भाग – 1

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण - 2014

मूल्य : रु० 28.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा सुनैना प्रिंटिंग प्रेस, बैरिया, पटना द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित ।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल 2013 से राज्य के कक्षा IX एवं X हेतु ऐच्छिक विषयों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस संदर्भ में एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित यह पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री जीतन राम मांझी, शिक्षामंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री आर० के० महाजन के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

दिलीप कुमार, आई. टी.एस.
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन
निगम लि०, पटना

दिशा बोध

अध्यक्ष – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)

समन्वयक – डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना

लेखक सदस्य :

1. **डॉ. मधु बाला सिन्हा**
   सहायक प्रोफेसर (संस्कृत)
   राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काजीपुर, पटना ।
2. **श्री शंभू राय**
   सहायक शिक्षक (संस्कृत)
   राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   गुलजारबाग, पटना सिटी, पटना –7
3. **डॉ. शहिद आलम**
   राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय,
   सुन्दरपट्टी, पकड़ीदयाल, पूर्वी चम्पारण ।
4. **डॉ. बिभाष चन्द्र**
   सहायक शिक्षक (संस्कृत)
   शहीद राजेन्द्र प्रसाद सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   (पटना हाई स्कूल), गर्दनीबाग, पटना–2
5. **श्रीमती प्रियंका**
   सहायक शिक्षिका (संस्कृत)
   अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय,
   उसफा, पटना ।

पुरोवाक्

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं चैव संस्कृतिः

साम्प्रतं संस्कृतभाषायाः तस्यां रचितस्य वाङ्मयस्य च महत्त्वं सर्वत्र स्वीक्रियते । ज्ञानविज्ञानक्षेत्रेषु असंख्याः ग्रन्थाः तस्यां विराजन्ते । अस्मिन् विज्ञानप्रवाहमण्डितेऽपि काले संस्कृतस्य महत्त्वं न न्यूनीकृतमस्ति, यतः इयमेव प्राचीनतमा भाषा नवीनानपि विषयान् आलिङ्ग्य निरन्तरं प्रवर्तते । अस्याः भाषायाः व्यापकत्वं संगणकयुगे सुतराम् अनुभूयते, यतः कोटिशः पारिभाषिकान् शब्दान् जनयितुं सामर्थ्यम् अस्यामेव भाषायां वर्तते नान्यत्र ।

संस्कृतभाषायाः शिक्षणं भारते वर्षे विविधैः प्रकारैः भवति । प्रायशः सर्वेषु भारतीयराज्येषु विद्यालयस्तरेण संस्कृतभाषायाः शिक्षणं दृश्यते । किन्तु विषयवस्तुनिरूपणे पाठ्यक्रमस्य छात्र-परिवेशस्य च अन्तरालं विपुलमासीत् इति राष्ट्रियपाठ्यचर्यायां तस्य निराकरणं प्रतिज्ञातम् । तदाश्रितानि पाठ्यपुस्तकानि परिवेशस्य संग्रहणमपि स्वीकुर्वन्ति । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः अनुसरणं भवेदिति अस्माकं संकल्पः । ततः छात्रकेन्द्रिता शिक्षाव्यवस्था अत्रापि प्रवर्तते ।

अस्माकं प्रयासः तदैव सफलीभवेत् यदा विद्यालय-प्राचार्याः शिक्षकाः अभिभावकाश्च विषयेऽस्मिन् सहयोगिनः स्युः । एते सर्वेऽपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाविकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रेरयेयुः । यदि च अनुकूला सुरुचिपूर्णा पाठसामग्री प्रस्तूयेत, तदा छात्राः परिवारस्य अग्रजैः अभिभावकैः, विद्यालयस्य च शिक्षकैः प्रदत्तस्य स्वानुभूतज्ञानेन आत्मनः पूर्वार्जितं ज्ञानं संयोज्य किमपि योग्यतरं नवीनं ज्ञानं प्राप्नुयुः । एवमेव परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापकः स्यात् । पुस्तकाधारितं ज्ञानमेव न पर्याप्तं प्रत्युत छात्रस्य सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च विकासः अपि तत्र अनिवार्यतया ग्रहणीयः । अनेन क्रमेण शिक्षणप्रक्रियायां छात्राः अपि

प्रतिभागिनः भवन्ति इति न सन्देहः ।

राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि अस्माभिः निर्मितानि यत्र उपर्युक्तः सर्वोऽपि कार्यक्रमः अङ्गीभूतः । संस्कृतशिक्षायाः नवमकक्षायाः कृते ऐच्छिक-विषयरूपेण पाठ्यपुस्तकमिदं छात्रेभ्यः चिन्तनस्य उत्सुकतावृद्धेः लघुसमूहेषु वार्तायाः कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च पर्याप्तम् अवसरं प्रदास्यति । यथापूर्वम् इहापि द्रुतवाचनाय अनुपूरकसामग्री प्रदत्ता ।

बिहारराज्यशैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण-परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तक-विकाससमितेः अध्यक्षाय विद्वद्वरेण्याय डा. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूरिशः साधुवादं वितरति स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति ।

प्रवर्ततां पुस्तकमिदं संस्कृतहिताय ।

हसन वारिस
निदेशकः
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहारः

◆◆◆

भूमिका

आज संसार की समस्त उपलब्ध भाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन तथा सबसे लम्बी ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परम्परा की भाषा संस्कृत ही है । ऋग्वेद के समय से अद्यावधि निरन्तर इसका वाचिक-साहित्यिक प्रयोग होता रहा है । भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं का वहन इसके ग्रन्थों द्वारा होता रहा है । भारतीयों के हृदय में श्रद्धा तथा आदर का भाव धारण करने वाली यह भाषा विदेशी विद्वानों के द्वारा भी पर्याप्त समादृत हुई है । संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था भारत के प्रायः सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में वर्तमान है तथा विदेशों में भी प्राच्य विद्या या भारतीय विद्या के अन्तर्गत इसके अनुशीलन की मौलिक व्यवस्था है । भारत की बंगला, उड़िया, असमिया, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, डोगरी, नेपाली आदि भाषाएँ संस्कृत से साक्षात् निकलती हैं । दक्षिण भारतीय भाषाएँ भी अपनी शब्द-सम्पत्ति के लिए संस्कृत पर विपुल रूप से आश्रित हैं ।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में संस्कृत का भाषाशास्त्रीय उपयोग व्यापक रूप से दिखाई पड़ता है । ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय भाषाएँ उनके सिद्धान्तों की व्याख्या करती हैं जबकि पारिभाषिक शब्दावली के लिए उनमें संस्कृत का आधार ही आलोकस्तम्भ है । भारत की बहुभाषिकता में विभिन्न भाषाओं के मौलिक सेतु के रूप में संस्कृत ही एक मध्यस्थ भाषा का काम करती है । भाषाओं के बीच अनुवाद का कार्य संस्कृत को आधार बनाने से सरल हो जाता है ।

संस्कृत में शब्द-निर्माण की क्षमता संसार की सभी भाषाओं से अधिक है । हजारों धातुओं, प्रत्ययों, उपसर्गों तथा उनसे सम्बद्ध अर्थों की व्यवस्था इसमें इतनी वैज्ञानिक है कि कोई भी नवशिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार हजारों नवीन शब्दों की रचना कर सकता है । इसलिए आज विश्वभर में पारिभाषिक शब्दावली के लिए भविष्य का

विज्ञानजगत् संस्कृत की ओर उन्मुख है । उपसर्गों और प्रत्ययों के योग से एक-एक धातु से सैकड़ों शब्द बन सकते हैं । फिर भी आज के भौतिकता-प्रधान बाजारवाद से प्रभावित युग में संस्कृत को पहले की अपेक्षा अनेक संघर्ष और प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं । किन्तु इसकी मौलिक जीवनी शक्ति इतनी प्रबल है कि नयी-नयी साहित्यिक-शास्त्रीय रचनाओं के अंकुर तथा प्रवाल निरन्तर फूटते रहते हैं । पिछले एक सौ वर्षों में जितनी संस्कृत रचनाएँ हुई हैं वे इसका मुखर प्रमाण हैं । भारत के सभी राज्यों में संस्कृत रचनाएँ हो रही हैं, यह संस्कृत शिक्षा का सर्जनात्मक परिणाम है । पूरे राष्ट्र का (केवल एक क्षेत्र या प्रान्त का नहीं) प्रतिनिधित्व संस्कृत भाषा के ही द्वारा सम्भव है । हमें ज्ञात है कि संस्कृत भाषा में लिखे गये पुराणों ने सम्पूर्ण भारत-राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता का व्यापक प्रमाण दिया है जिससे भारत की सांस्कृतिक एकता आज भी सुरिक्षत है अन्यथा राजनीति और क्षेत्रीय स्वार्थवश भारत अनेक खण्डों में रह जाता ।

किसी भी आधुनिक सम्पन्न भाषा में जो विशेषताएँ, जैसा साहित्यसर्जन और जिस प्रकार वैविध्य हो सकता है वह सब संस्कृत में विद्यमान है । विद्वानों का एक समृद्ध वर्ग स्वीकार करता है कि संगणक (Computer) के लिए भावी भाषा के रूप में संस्कृत में अपार सम्भावनाएँ हैं । परिणामतः भौतिकवादी युग भी संस्कृत के महत्त्व की उपेक्षा नहीं कर सकता । प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय संस्कृत में बहुत तेजी से हो रहा है। संस्कृत द्वारा हम अपनी प्राचीन संस्कृति के गौरव को तो जान ही सकते हैं आधुनिक विषयों को भी इसके द्वारा आत्मसात् कर सकते हैं । अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है । अतः इसके अनिवार्य अनुशीलन की आवश्यकता है ।

ऊपर कहा गया है कि भारत की बहुभाषिकता की दृष्टि से संस्कृत का उपयोग है। बिहार राज्य के सन्दर्भ में यह बहुभाषिकता मैथिली, भोजपुरी, मगही, एवं उनकी

अंगरूप (अंगिका वज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है । ये भाषाएँ संस्कृत से तद्भव रूप में ही सही, अपनी शब्दसम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्यरचना को साक्षात् ग्रहण करती हैं । इसलिए बिहार के परिवेश में संस्कृत के अनुशीलन का अत्यधिक महत्त्व है ।

संस्कृत का नवीन पाठ्यक्रम राष्ट्रिय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में ही हमलोगों ने प्रस्तुत किया है जिसमें शिक्षा को मुख्यतः आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करना प्रतिज्ञात है तथा कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हट कर छात्रों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करने का उद्देश्य रखा गया है । नवम कक्षा में ऐच्छिक विषय के रूप में जो संस्कृत रखी गयी है वह विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक है । मुख्यतः संस्कृत विषय के समान इसमें भी प्रत्येक पाठ विविध उपकरणों से समन्वित है जैसे शब्दार्थ, व्याकरण, लिखित तथा मौखिक अभ्यास एवं योग्यता-विस्तार ।

नवम कक्षा की संस्कृत (ऐच्छिक) की यह पुस्तक आठ मूल पाठों तथा दो द्रुतवाचन पाठों से युक्त है । मूल पाठों में चार गद्यात्मक और चार पद्यात्मक हैं । इन पाठों में विभिन्न रुचियों तथा विषयों का समाकलन हुआ है । गद्य पाठों में प्रथम **लौहतुला** एक कथा जिसमें "जैसे को तैसा" इस कहावत का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है । **सुभाषचन्द्रवस** दूसरा पाठ हैं जिसमें प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी नेताजी की उपलब्धियों का परिचय है । तीसरा गद्य-पाठ **बिहार राजधानी** है जिसमें पाटलिपुत्र के प्राचीन गौरव के साथ आधुनिक स्थितियों का भी निरूपण है ।-अंतिम गद्य-पाठ **स्वास्थ्यमुन्नतिकारकम्** है जिसमें अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने का आग्रह है ।

पद्य-पाठों में प्रथम **नीतिश्लोकाः** है जहाँ जीवनोपयोगी आठ पद्य दिये गये हैं । पुनः **सूर्यस्य महिमा** में सूर्य से सम्बद्ध दस श्लोक हैं जो सूर्य के विभिन्न महत्त्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट करते हैं । तीसरा पद्य पाठ **लोकहितं मम करणीयम्** पाँच कड़ियों का गीत है जो मानव को परोपकार के लिए प्रवृत्त करता है । चौथा पद्य पाठ **यक्ष-युधिष्ठिर-संवादः** है जो महाभारत के वनपर्व का प्रसिद्ध अंश है । इसमें सदाचार का महत्त्व संवाद के

माध्यम से प्रकट किया गया है ।

द्रुतवाचन के अन्तर्गत **प्रहेलिका** में छह पहेलियाँ एक-एक श्लोक में दी गयी हैं । **सूक्ति-सुधा** में बीस सुन्दर समयोपयोगी उक्तियाँ दी गयी हैं जो किसी भी वार्त्तालाप को आकर्षक बना सकती हैं । परिशिष्ट में व्याकरण और रचना का भाग प्रस्तुत है जिसके अन्तर्गत प्रत्याहारों का परिचय, सन्धि (स्वर संधि), शब्दरूप, धातुरूप, कारक और विभक्तियाँ, समासों का सामान्य परिचय कुछ कृत् प्रत्यय एवं निबन्ध तथा पत्रलेखन के आदर्श दिये गये हैं ।

पाठ्य पुस्तक को यथासाध्य उपयोगी बनाया गया है । विभिन्न कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने परिश्रमपूर्वक सामग्री का चयन, लेखन तथा परिष्कृति का सफल प्रयास किया है । छात्रों की रुचि संस्कृत में बढ़े इसका पूरा ध्यान रखा गया है । यदि इससे छात्रों में संस्कृत समझने, बोलने और लिखने की प्रवृत्ति बढ़े तो हम अपना प्रयास सार्थक समझेंगे।

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
अध्यक्ष
संस्कृत पाठ्य-पुस्तक विकास-समिति
(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार)

◆◆◆

विषयानुक्रमणिका

मङ्गलम्		1
1. लौहतुला		2
2. नीतिश्लोकाः		12
3. सुभाषचन्द्रवसुः		24
4. सूर्यस्य महिमा		33
5. बिहार राजधानी		45
6. लोकहितं मम करणीयम्		53
7. स्वास्थ्यमुन्नतिकारकम्		61
8. यक्ष-युधिष्ठिरसंवादः		72
द्रुतवाचनम्		81-89
1. प्रहेलिका		81
2. सूक्ति-सुधा		89
व्याकरणं रचना च		99-125
(क) प्रत्याहाराणां परिचयः		99
(ख) सन्धिः (अच्सन्धिः)		100
(ग) शब्दरूपाणि		104
(घ) धातुरूपाणि		108
(ङ) कारकाणि विभक्तयश्च		114
(च) समासानां सामान्यपरिचयः		118
(छ) प्रत्ययाः		123
निबन्धाः/पत्रलेखनम्		126-132

◆◆◆

मङ्गलम

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् । भूयश्च शरदः शतात् ॥ 1॥ (यजुर्वेद 36:24)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽसन्-
अप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ 2 ॥ ऋग्वेद (1.89.1)

भावार्थ :

देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है। हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें। सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें। और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे। ॥ 1॥

हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवम् अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों। प्रगति को न रोकनेवाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन हमारी वृद्धि के लिए तत्पर रहें। ॥ 2 ॥

◆◆◆